International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-8, Issue-5 October- 2021
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

चीन एवं भारत के सम्बन्धों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक राजनैतिक मूल्यांकन

Dr. Satish Chandra Joshi
Dept. of Military Science, (Govt. P.G. College)
Pithoragarh (Uttrakhand)

सरांश :

चीन एवं भारत दोनो देशों के सम्बन्ध अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। प्राचीन काल से ही दोनों देशों के मध्य व्यापारिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध रहे हैं। स्वतंत्रता के पश्चात भारत ने सदैव चीन की तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाया है, परन्तु चीन ने कभी भी भारतीय मित्रता का आदर नहीं किया। अक्टूबर, 1949 में साम्यवादी सरकार की स्थापना होते ही भारत ने सर्वप्रथम चीन को राजनयिक मान्यता प्रदान कर दी। भारत और चीन के मध्य कुछ बड़ी और महत्वपूर्ण समानताऐं आज भी है। उदाहरणार्थ – दोनों देशों का अतीत सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध रहा है। दोनों देशों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। दोनों देशों के पास विश्व की लगभग 40 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। दोनों देशों के पास विशाल भू–भाग है। दोनों देशों के पास विशाल ऊर्जा के स्त्रोत है। फिर भी कई मायने में भारत एवं चीन के पास कई महत्वपूर्ण असमानतायें भी है, चीन एशिया का एक मात्र ऐसा देश है, जिसकी 200 कि0मी0 लम्बी स्थलीय सीमा सर्वधिक राष्ट्रों के साथ लगी हुई है। (अफगानिस्तान, पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, लाओस, उत्तर कोरिया, वियतनाम, भारत, पूर्व सोवियत गणराज्यों) से मिलती है।

मुख्य शब्द : चीन, पाकिस्तान, साम्यवादी सरकार भारतीय बौद्ध धर्म, भारतीय सरकार आदि

प्रस्तावना :

भारत और चीन एक पड़ोसी राष्ट्र है। भारत ने रिश्तों को मजबूत बनाने के लिए 29 अप्रैल, 1954 को चीन के साथ पंचशील समझौता किया। यह समझौता आठ वर्षों के लिए किया गया था, जिसमें भारत ने तिब्बत पर चीन की प्रभुता को स्वीकार कर बिगड़े सम्बन्धों को एक नई दिशा प्रदान की। परन्तु सन् 1962 ई में चीन ने अपनी विस्तारवादी नीति पर अमल करते हुए भारत पर आक्रमण कर दिया, और 38000 वर्ग कि0मी0 भू–भाग कर कब्जा कर लिय।[1]

चीन अपने पड़ोसी देशों के साथ सीमा विवाद सुलझाने में लगा हुआ है। अगर तुलना की जाये, तो भारत के साथ चीन की सीमा विवाद जो अन्य सभी देशों के साथ सीमा विवाद से कहीं अधिक महत्वपूर्ण और बड़ा है। भारत–चीन के बीच सीमा वार्ता द्वितीय विश्व युद्ध के बाद किन्हीं दो देशों के बीच चलने वाली सबसे लम्बी वार्ता है, इन वार्ताओं के माध्यम से चीन बराबर भारत पर दबाब बढ़ाता जा रहा है। चीन भारत की राजनीतिक व आर्थिक घेरेबंन्दी के साथ–साथ सैनिक घेरेबन्दी में भी जुडा हुआ है। जिससे चीन समय–समय पर मनौवैज्ञानिक रूप से भारत को अस्थिर करने के लिए दबाब बनाये रखना चाहता है।[2]

भारत–चीन के बीच वफर स्टेट की भूमिका का निर्वाह करने वाला तिब्बत आज पूरी तरह चीन के नियंत्रण में है तिब्बत के भारत से धार्मिक, सांस्कृतिक, व्यापारिक सम्बन्ध थे। बौद्ध धर्म का प्रवर्तक होने के कारण तिब्बत भारत को

अपना धर्म गुरू मानता है।[3] 1913 ई0 में तिब्बत ने जब स्वतंत्रता की घोषणा की तो चीन इसे अपने राष्ट्र में मिलाने का स्वप्न संजोने लगा, परिणामस्वरूप चीन ने लगभग 80000 सैनिकों से तिब्बत पर हमला कराकर 1950 में तिब्बत पर अधिकार कर लिया। 23 मई, 1951 को चीन ने दलाई लामा से 17 सूत्रीय समझौते पर जबरदस्ती हस्ताक्षर करवा लिए और तिब्बत पर चीन का अधिकारिक रूप से कब्जा हो गया।[4] पंडित जवाहर लाल नेहरू ने पंचशील समझौते (1954) के द्वारा तिब्बत पर चीन के कब्जे को मान्यता देकर भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए जरूरी एक वफर जोन कोचीन का हिस्सा बनवा दिया। चीन की विस्तारवादी नीति के प्रणेता माओत्से तुंग ने अपनी सीमा के सुरक्षार्थ 'फाइन फिंगर थ्यौरी' की घोषणा की, जिसमें तिब्बत हथेली है, और नेपाल, भूटान, सिक्किम, लद्दाख व नेफा इसकी पाँच अगुलियाँ है। आज चीन बड़ी संख्या में हान वंशी चीनियों को तिब्बत में बसा कर असल तिब्बतियों की संख्या कम करना चाहता है। वहीं लगभग 23 लाख तिब्बती और 70 लाख हान वंशी चीनी आज तक तिब्बत में बस चुके हैं।[5]

चीन भारत के लगभग समूची उत्तरी सीमा को विवादास्पद मानता है। उसने उत्तर–पश्चिम में अक्साईचिन के 38000 वर्ग कि0 मी0 विशाल क्षेत्र. पर 1962 में अधिकार कर लिया था। इसी तरह पूर्वोत्तर भारत में अरूणाचल प्रदेश के 90000 वर्ग कि0 मी0 क्षेत्र को भी चीन अपना अंग मानता है, वह मैकमोहन रेखा को भी भरत चीन सीमा रेखा मानने से इंकार करता है। उसका मानना है कि ब्रिट्रिश साम्राज्यवादियों द्वारा चीन के अन्तिम हिन राजवंश की कमजोरियों का फायदा उठाकर एक असमान सन्धि पर हस्ताक्षर करवा लिये गये थे।[6] इसलिए वह मैकमोहन रेखा को मानने के लिए तैयार नहीं। दूसरी तरफ चीन भारतीय अरूणाचल प्रदेश को अपना हिस्सा साबित करने के लिए इसे स्वायत्त तिब्बत प्रदेश का अंग बताता है। चूँकि तिब्बत को चीन अभिन्न अंग मानता है, इसलिए अरूणाचल प्रदेश भी उसका हिस्सा है।[7] 1962 ई0 में भारत–चीन युद्ध के समय चीनी सेना अरूणाचल प्रदेश में काफी भीतर त्वांग तक घुस आयी थी, लेकिन लड़ाई खत्म होने के बाद खुद लौट गई थी। जबकि पश्चिम क्षेत्र में चीन अपनी स्थिति मजबूत करना चाहता था। आज वह अक्साई चि क्षेत्र में इतना मजबूत हो चुका है कि उसे पीछे धकेलना किसी के लिए आसान नहीं रह गया है।[8]

पश्चिमी क्षेत्र में चीन को एक और लाभ प्राप्त हुआ। उसके सर्वधिक विश्वसनीय पाकिस्तान ने भारत से हथियाई गई भूमि का लम्बा गलियारा उसके हवाले कर दिया, जिसे चीन ने कारकोरम मार्ग में बदल दिया है। यह पर्वतीय सड़क तिब्बत को आजाद कश्मीर से होकर पाकिस्तान को जोड़ती है। इस सड़क पर एक साथ कई टैंक जा सकते हैं। इस प्रकार यह एक बेहद महत्वपूर्ण सामरिक क्षेत्र चीन ने पाकिस्तान से प्राप्त कर लिया है।[9]

अरूणाचल प्रदेश पर अपने जोरदार दावों के बाद चीन ने सिक्किम को भी सीमा विवाद में लाने की कोशिश की। इस तथ्य के बाबजूद 4057 कि0मी0 लम्बी हिमालय सीमा में से सिर्फ 206 मि0मी0 की सिक्किम – तिब्बत सीमा को ही चीन गैर–विवादित मानता है। यह सीमा 1890 में एग्लो–सिक्किम सम्मेलन में तय की गयी थी। नवम्बर, 2007 में चीनी सेना ने भारतीय सेना द्वारा सिक्किम–चीन–भूटान सीमा पर बनाए गए कुछ बंकर ध्वस्त कर दिये थे। साथ ही चीन की आक्रामकता सिक्किम में भारतीय रक्षा में सेंध लगाती है। चीन सिक्किम के फिंगर प्वाइंट पर दावा कर रहा है यह करीब 2 किलोमीटर लम्बा गलियारा है जो उंगली की तरह लगता है। चीन दर्जनों बार इस क्षेत्र में घुसपैठ कर चुका है।

आज चीन भारत में ऐसी योजना को अंजाम देने की कोशिश में रहता है। जिससे भारत की मुश्किले बढ़ती रहे। वह अपने भू–भाग में ब्रह्मपुत्र नदी (चीन में यह नदी सांगपो यारलुंग नाम से जानी जाती है) पर 11 बड़े जल संग्रहण टैंक, 2 बड़ी नहरें, 5 विशाल डैमों का निर्माण कर रहा है। उक्त निर्माण कार्य 2025 तक पूरा होने का अनुमान है, जिसके पूरा होते ही भारत और बांग्लादेश के हिस्से में आने वाली ब्रह्मपुत्र का जल प्रवाह 20 फीसदी तक रह जायेगा, और यह नदी 2050 तक सूख जाने की आशंका है।ब्रह्मपुत्र की लम्बाई 2906 कि0मी0 है, जिसमें सबसे बड़ा भाग 1625 कि0मी0 चीन के तिब्बत इलाके, 918 कि0मी0 भारत तथा 363 कि0मी0 बांग्लादेश में है। चीन दूरगामी नीति के तहत ब्रह्मपुत्र गतिविधियाँ चलाकर भारत को गहरी चोट पहुँचाना चाहता है। ब्रह्मपुत्र के जल प्रवाह पर चीनी नियंत्रण से अरूणाचल एवं असम की तमाम बिजली परियोजनाऐं बन्द हो जायेंगी, जिससे पूर्वोत्तर का औद्योगिक विकास प्रभावित होगा। एशिया की धुरी चीन में ऐसी नदियों की संख्या पूरे विश्व में सबसे अधिक हैं जो चीन से निकलकर अन्य देशों में बहती है जैसे – रूस, भारत, कजाकिस्तान, आदि। दुनिया के किसी भी देश में इतने बांध नहीं है, जितने चीन में है। इसमें सबसे बड़ा बांध जार्जेस भी शामिल है। विश्व के 50 हजार बड़े बांधों के करीब आधे बांध चीन में ही हैं। वह मेकोंग, सलवीन, ब्रह्मपुत्र, अरूण, इरटिश इली और अमुर जैसी नदियों पर बांध बना रहा है। चीन इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय नदियों का स्वरूप बदलकर उन्हें राष्ट्रीय बनाने में जुटा हुआ है। आज चीन ने भारत को घेरने के लिए हिन्द महासागर में भी चुनौती देना प्रारम्भ कर दिया। क्योंकि हिन्द महासागर एक बहुत बड़ा व्यापारिक मार्ग है। चीन समुद्री तस्करों से प्रभावित अदन की खाड़ी में चीनीगत शुरू करने का मकसद इस क्षेत्र में प्रभाव कायम करना और समुद्र में दूर तक अपनी गतिविधियों को बढ़ाना है। एक बात तो स्पष्ट है कि चीन हिन्द महासागर में भारतीय नौसेना के प्रभुत्व को चुनौती देना चाहता है। चीनी सेना के चाइनीज इंस्टीट्यूट फार इंटरनेशनल स्ट्रेटेजिक स्ट्डीज (मई 2008) में बताया गया था कि विश्व में बहुत से प्रमुख देशों ने समुद्रों में नौ सैनिकों अड्डे स्थापित कर रखे हैं, और चीन को इससे अलग नहीं रहना चाहिए। चीन का मानना है कि ताइबान की खाड़ी से हिन्द महासागर के पश्चिमी तट की सुरक्षा करना चीन का वैध अधिकार है जिसके मद्देनजर चीन पाकिस्तान के ग्वादर, श्रीलंका के हव्वनटोटा, म्यांमार के कोद्वीप में अपने नौसैनिक अड्डे एवं संचार तंत्र स्थापित करना प्रारम्भ कर दिया है। म्यांमार चीन के लिए अपने अक्याव, हैंगी, मानऔंग जादेम्की एवं संगाथित द्वीपों पर अपनी खुफिया संचार उपकरण के जाल बिछा सकता है। ईरावदी नदी के मुहाने पर म्यामार में पैगोडा प्वाइन पर चीन की सैन्य आपूर्ति का अड्डा बना चुका है। सेशेल्स द्वीप भी चीन को अपने यहाँ नौसेनिक अड्डा बनाने की अनुमति दे चुका है। सेशेल्स 115 द्वीपों का देश है कहने को तो चीन यह सुविधा सोमालिया के समुद्री डाकुओं से रक्षा के लिए तैनात अपने युद्धपोतों को राशन एवं ईंधन की आपूर्ति के लिए खड़ा करना चाहता है, परन्तु वास्तविक मंशा भारत की घेराबन्दी है। भारत के 572 छोटे–बड़े द्वीपों वाले केन्द्र शासित क्षेत्रों में चीन काफी दिनों से अपनी घुसपैठ कर रहा है तथा थाईलेण्ड, इण्डोनेशिया, मलेशिया के लोग इन द्वीपों में भी घुसपैठ कर रहे हैं। जिन्हें चीन अत्याधुनिक हथियार उपलब्ध कराता है। वह इन क्षेत्रों पर स्थापित अपने संचार तंत्र से भारत की मिसाइल टेस्टिंग सेन्टर चाँदीपुर, उड़ीसा, एवं नौसेना के पूर्वी कमान पर निगरानी कर सकता है। चीन का घेरा हारमुज से लेकर मलक्का जलडमरूमध्य तक होगा। आंकड़ों के अनुसार इस क्षेत्र में लगभग 1 लाख जहाज हर साल गुजरते हैं। जिसमें दो तिहाई तेल टैंकर, आधे कार्गो एवं एक तिहाई अनुसार इस क्षेत्र में लगभग 1 लाख जहाज हर साल गुजरते हैं। जिसमें दो तिहाई तेल टैंकर, आधे कार्गो एवं

एक तिहाई कन्टेनर ट्रैफिक इसी रास्ते में गुजरते हैं। इस क्षेत्र पर नियंत्रण के पीछे चीन की आर्थिक एवं व्यापारिक दृष्टि काम कर रही हैं। जिससे भारत को आर्थिक रूप से कमजोर किया जा सके।

निष्कर्ष :

चीन का साइबर आक्रमण भी भारत के लिए आज अत्यन्त ही चिन्ता का कारण बन चुका है। चीन ने खुफिया साइबर नेटवर्क ने क्रमबद्ध तरीके से भारत के शीर्ष सुरक्षा, और प्रतिरक्षा दस्तावेजों, विदेशी मंत्रालयों के सूचना तंत्रों, मिशनों एवं अन्य महत्त्वपूर्ण दस्तावेजों में सेंध लगाई है। कनाडा की इनफारमे बारफेयर मानिटर (आई0डब्ल्यू0एम0) ने खोज की है कि चीन ने (2009 में) 103 देशों के 1295 कम्प्यूटरों को हैक किया। जिसमें ईरान, भारत, अमेरिका, दक्षिण कोरिया, इण्डोनेशिया, पुर्तगाल, जर्मनी, ताइवान आदि देशों की वेबसाइट से जानकारियाँ चुराई गयी थीं। खुफिया तंत्र से चुराई गई रक्षा व प्रतिरक्षा जानकारियों का इस्तेमाल चीन सबसे बड़े प्रतिद्वन्द्वी भारत के विरूद्ध कर सकता है। जिससे भारत पर कभी भर संकट हो सकता है।

सन्दर्भ :

1. सक्सेना, वन्दना – चीन और भारतीय सुरक्षा, रक्षार्थ, पृ0–104
2. कुमार, डॉ0 भाचीस – 'चीन की दक्षिणी एशिया में विस्तारवादी नीति एवं भारत के साथ अर्वाचीन सम्बन्ध, एवं सुरक्षा परिदृष्य, पृ0–47
3. चौहान, डॉ0 भारती – ''भारत–चीन सम्बन्ध : स्त्रातजिक अवलोकर' 'तूणीर' पृ0–140
4. सिंह, एस0 कुमार भारत और चीन के कूटनीतिक सम्बन्ध, प्रतियोगिता दृष्टि पृ0–44
5. चतुर्वेदी, सुधाकर – चीनी घुसपैठ के इरादे को समझिए, अमर उजाला, वाराणसी, पृ0–12
6. चेलानी, ब्रह्मा बीजिंग की नई विसात, दैनिक जागरण, वाराणसी, पृ0–10
7. सरकार, डी.सी0, सेलेक्ट इंस्क्रिप्शन्स, भाग 2, अभि0 सं0 17, पृ0–267
8. उपरोक्त, पृ0–265–266
9. गैरौला, वा, भारत के उत्तर–पूर्व सीमान्त देश, (भारत, नेपाल, भूटान, सिक्किम, भूटान), पृ0 132